आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 11-10-14

अपने ज्ञान से हम आत्माओं को परमात्मा और सृष्टि चक्र की याद सिखलाने-वाले, बेहद के ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - शांतिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दुखधाम का बुद्धि से सन्यास करो(दुखधाम को भूलते जाओ).

बाबा हमें हर साकार मुरली में कहते है बाप और वर्से को याद करो. यह तो सब जानते है कि खुद को आत्मा समझकर बाप को याद करना है लेकिन आत्मा को स्वदर्शन-चक्र कैसे फिराना है वह आज बाबा ने मुरली में सिखलाया हैं.

- हम आत्माये तीन धामों का चक्र लगाती हैं, शांतिधाम, सुखधाम और यह हैं दुखधाम. जब मैं आत्मा शांतिधाम में हूँ तो मैं मुक्ति में हूँ. फिर मैं आत्मा सुखधाम में हूँ तो मैं जीवनमुक्ति में हूँ. बाद में जब मैं आत्मा दुखधाम में आती हूँ तो मैं जीवनबन्ध में हूँ. अभी मैं आत्मा जीवनबन्ध से जीवनमुक्ति में जा रही हूँ.
- हम आत्माये अपने घर शांतिधाम में है तो सम्पूर्ण पवित्र हैं. वहॉ से हम आत्माये पहले-पहले आते है सम्पूर्ण पवित्र दुनिया सतयुग में पार्ट बजाने. फिर पार्ट बजाते-बजाते हम आत्माये अपवित्र बन जाती हैं तो सारी दुनिया भी अपवित्र बनती हैं. अब हम आत्माओं का बाबा आया हुआ हैं, जिसे याद करने से हम आत्माये वापस पवित्र बन जायेंगी. फिर पवित्र आत्मा, अपने बाबा के साथ घर वापस चली जायेगी. फिर सतयुग में फिर से पार्ट बजाने आयेगी.
- जब मैं आत्मा सतयुग में हूँ तो सच्चे सोने के समान सूर्यवंशी हूँ. फिर त्रेतायुग से मुझ आत्मा में चांदी की खाद पड़ती है तो चन्द्रवंशी बन जाती हूँ. फिर द्वापर में मुझ आत्मा में तांबे की और कलियुग में मुझ आत्मा में लोहे की खाद पड़ती हैं. अब संगमयुग में बाबा के साथ योग से मुझ आत्मा में चांदी, तांबा, और लोहे की जो खाद पड़ी है वह निकाल जाती हैं. योगबल से मैं आत्मा वापस सच्चा सोना बन जाती हूँ.
- पहले तो हम आत्माये अपने घर, शांतिधाम में है फिर पहले-पहले आते है सतयुग में, उस को कहा जाता है गोल्डन एजड. फिर हम आत्माये गोल्डन एजड से सिल्वर एजड में और बाद में आते है कोपर एजड में. फिर पिछाड़ी में हम आत्माये आइरन एजड में आते है क्योंकि

आत्मा में खाद पड़ती हैं. अब हम आत्माओं को वापस सतोप्रधान बनकर गोल्डन एजड में जाना हैं. वहॉ प्रकृति भी वहॉ सतोप्रधान हैं तो हमें शरीर भी सतोप्रधान मिलेगा.

- अभी पहले-पहले मुझ आत्मा को शांतिधाम जाना है इसलिए बाप को याद करना है तब ही मैं आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हूँ. इसमें टाइम भी इतना ही लगता है जितना टाइम बाप यहॉ रहते हैं. वहॉ से मुझ आत्मा को शरीर मिलता है सतयुग में, तो कहा जाता है - गोल्डन एजड जीवात्मा. गोल्डन एजड जीवात्मा से फिर मैं बनती हूँ सिल्वर एजड जीवात्मा. सिल्वर एजड जीवात्मा से बनती हूँ कोपर एजड जीवात्मा और अन्त में होती हूँ तमोप्रधान आइरन एजड जीवात्मा. अभी वापस बाप की याद से मुझ आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना हैं और अपने घर शांतिधाम जाना हैं. इसके लिए मुझे इस पुरानी दुनिया दुखधाम का सन्यास करना हैं.

- मैं आत्मा, इस सृष्टि चक्र के ड्रामा में आधाकल्प, सतयुग और त्रेतायुग, देही-अभिमानी रहकर अपना पार्ट बजाती हूँ. फिर आधाकल्प, द्वापर और कलियुग, देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाती हूँ. अब संगमयुग पर वापस मुझे देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है और फिर बाबा के साथ घर जाना हैं. वापस सतयुग के आदि में देही-अभिमानी होकर पार्ट बजाने आना हैं.

- मुझ आत्मा को सारे सृष्टि चक्र में पार्ट बजाते भिन्न-भिन्न तख्त मिलते हैं. सतयुग के आदि में मुझे बड़ा फस्टक्लास तख्त मिलता है उसे कहेंगे गोल्डन एजड तख्त. फिर मुझ आत्मा को सिल्वर, कोपर और आइरन एजड तख्त मिलते हैं. अभी वापस मुझे गोल्डन एजड तख्त चाहिए इसलिए बाप को याद करना है जिसे मुझ आत्मा की खाद निकाल जाये.

- अभी में आत्मा ईश्वरीय सम्प्रदाय में अपना पार्ट बजा रही हूँ. फिर मैं आत्मा, दैवी-सम्प्रदाय में अपना पार्ट बजाने आती हूँ. फिर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सम्प्रदाय में मेरा पार्ट चलता हैं. फिर बाबा आते है और मेरा वापस ईश्वरीय सम्प्रदाय में पार्ट शुरू होता हैं. ऐसे में आत्मा यह सृष्टि चक्र में अपना प्रि-रेकोडेड (pre-recorded) , भिन्न-भिन्न पार्ट बजाती रहती हूँ.

ॐ शांति.